नवदेहलीस्थ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयसम्बद्धः

रानीपद्मावतीतारायोगतन्त्रादर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः,इन्द्रपुरम्,शिवपुरम्,वाराणसी

नवदेहलीस्थ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्याऽर्थिकानुदानेनानुष्ठिता

अखिलभारतीया-राष्ट्रीयसंगोष्ठी 'तारा'पत्रिकालोकार्पणञ्च

(दिनाङ्क- 18.03.2026ई.बुधवासरः)

विषयः—'भारतीयज्ञानपरम्परायां गुरुकुलस्यावदानम्'

'धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ। यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥'

(महा0आदि062153)

भारतीयज्ञानपरम्परा में गुरुकुलशिक्षणपद्धति मानवसंस्कृति की सर्वश्रेष्ठ शिक्षणविधि है।मानवसंस्कृतिका प्रथमसाहित्य वेदभारतीयज्ञानपरम्पराका उद्गमस्थल है। जिसमें आसृष्टि से सृष्टयन्त सम्पूर्ण चराचरजगत्के कल्याण एवं मानवजीवन के सर्वश्रेष्ठलक्ष्य धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय की प्राप्ति के निष्कण्टक मार्ग का वर्णन है। सम्पूर्ण वैदिकसाहित्य संस्कृतवाङ्मय में निबद्ध है,जिसे देवभाषा-गीर्वाणवाणी प्रभृति सँज्ञा से अलङ्कृत किया जाता है।

संस्कृतवाङ्मय में वेदके अष्टविकृति-पाठपरम्परा,ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद-स्मृति-गृह्यसूत्रादि,श्रौत-स्मार्त-यज्ञादि परम्परा, पुराणेतिहास-आख्यानपरम्परा में महर्षिवाल्मीकि के आदिकाव्य रामायण से लेकर अष्टादशपुराण-उपपुराण तथा वेदाङ्गादि शास्त्रों में शिक्षा-कल्प-व्याकरण-निरुक्त-छंद-ज्योतिषसहित धर्मशास्त्र-अर्थशास्त्र-राजनीति-आयुर्वेद एवं मानवजीवनोपयोगी ललितादि-चौंसठ-कला,चतुर्दशविद्याओंकी ज्ञानश्रृङ्खला गुरुकुलों के माध्यम से संरक्षित-पुष्पित-पल्लवित है।

भारतीयज्ञानपरम्परा में गुरुकुल अर्थात् गुरु-शिष्यपरम्पराका महत्वपूर्ण योगदान है। गुरु-शिष्यपरम्परा विश्व की सर्वश्रेष्ठ अप्रतिम शिक्षणपद्धति है,जिसमें हमारे मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने निरभ्र-आकाशमण्डल के सान्निध्य में सघनतरुवर- च्छायाङ्कित सुरम्यप्राकृतिकवातावरण में अपने अन्तेवासीशिष्यों को ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराया, अद्यावधि ज्ञान की यह अजस्त्रधारागुरु-शिष्यपरम्परा द्वारा प्रवाहित होती चली आ रही है,इसलिए वैश्विकसंस्कृति भी भारतीय गुरु-शिष्यपरम्परा के सामने नतमस्तक है।

गुरुकुलों द्वारा शास्त्रलेखनविधा भी उत्कृष्टता के सर्वोन्नतशिखर पर प्रतिष्ठापित की गई, जिसमें पुरालिपिशास्त्र के माध्यम सेहमारे ऋषि-मुनियों ने ब्राह्मी-शारदादि लिपियों में भोजपत्र-ताड़-तमाल-प्रस्तरादि ऋषिकालीन-संसाधनों के द्वारा साहित्यरचना प्रमुखता से की है। गुरुकुल का यह सर्वश्रेष्ठ योगदान मानवसभ्यता के लिए सदा अनुकरणीय एवं अमूल्य धरोहर के रूप में संरक्षित है।

भारतीयसंस्कृत-साहित्य सहित सभी विषय भारतीयगुरुकुल की ज्ञान-परम्परा के अन्तर्भूत-प्राण हैं,जिससे सम्पूर्ण सामाजिक-व्यवस्था अनुप्राणित है।

गुरुकुलाश्रितभारतीयज्ञानपरम्परा ही ज्ञानपरम्परा है, जिसका अनुसरण-अनुगमन करके मानवसमाज अपना सर्वविध उत्कर्ष कर सकता है,और इसीमें मानवसमाज का कल्याण है।श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण का वचन है-

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणःपरधर्मात्स्वनुस्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयःपरधर्मो भयावहः॥

(श्रीमद्भगवद्गीता-3.35)

'भारतीयज्ञानपरम्परायां गुरुकुलस्यावदानम्'विषयक यह अखिलभारतीय संगोष्ठी भारतीयज्ञानपरम्पराश्रित ज्ञान-विज्ञानधारा से समाज को प्रतिबोधित करने तथा भारतीयज्ञानपरम्परा की मुख्यधारा 'गुरुकुल' के महत्व को प्रतिपादित करने हेतु आयोजित है।

पञ्जीकरण के नियम-

इस अखिलभारतीयराष्ट्रीयसंगोष्ठी में सभी विषयों के विद्वान्,आचार्य,प्राध्यापक,शोधच्छात्र एवं सामाजिकश्रद्धालु-संस्कृतानुरागिजन प्रतिभाग कर सकते हैं। संस्कृत,हिन्दी,अंग्रेजी किसी एक भाषा मेंअपने संदर्भित शोधपत्र का सारांश अधिकतम 300 शब्दों में **unicode** के **mangal-14/kokila-16/sanskrittext** में तथा अंग्रेजी में **times new roman-14** में टाइप कराकर महाविद्यालय के ई.मेल-**ranipadmawatiasm@gmail.com**परदिनाङ्क- 17.03.2026 तक भेज सकते हैं तथा शोधपत्र की प्रति पञ्जीकरण के लिए अनिवार्य है।शोधपत्र वाचन हेतुपञ्जीकरण कराना अनिवार्य है तथा किसीप्रकार का मार्गव्यय/भत्ता आदि महाविद्यालय की ओर से देय नहीं होगा। शोधपत्र महाविद्यालयीय वार्षिक शोध-पत्रिका तारा में प्रकाशनार्थ सङ्कलित कराना अनिवार्य है।

पञ्जीकरणशुल्क-

शोधच्छात्रों के लिए रु.300(आवासरहित)
प्राध्यापकों के लिए रु.500 (आवासरहित)
विदेशी प्रतिभागियों के लिए रु.1500 (आवासरहित)

पञ्जीकरण लिंक-
https://forms.gle/Aj1SPietYQeJ4IlhMA

Scan Me for Registration

संयोजक
डॉ0विवेकानन्द झा
(प्रवक्ता-समाजशास्त्र)

सहसंयोजक
डॉ0माधवेन्द्र पाण्डेय
(अतिथिव्याख्याता-ज्योतिष)

अध्यक्ष
डॉ0कमलेश झा
(प्राचार्य)

संरक्षकः

अध्यक्षः

कुलसचिवः

आदर्शयोजनाप्रभारी

प्राचार्यः

नवदेहलीस्थ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयसम्बद्धः

रानीपद्मावतीतारायोगतन्त्रादर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः,इन्द्रपुरम्,शिवपुरम्,वाराणसी

नवदेहलीस्थ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्याऽर्थिकानुदानेनानुष्ठिता

अखिलभारतीया-राष्ट्रीयसंगोष्ठी 'तारा'पत्रिकालोकार्पणञ्च

(दिनाङ्क- 18.03.2026ई.बुधवासरः)

विषयः-'भारतीयज्ञानपरम्परायां गुरुकुलस्यावदानम्'

संयोजकः
डॉ. विवेकानन्दझा

कार्यक्रमस्थलम् - महाविद्यालयपरिसरः

सहसंयोजकः
डॉ.माधवेन्द्रपाण्डेयः

प्रेषकः
डॉ. कमलेशझा
प्राचार्यः
रानीपद्मावतीतारायोगतन्त्रादर्श-संस्कृतमहाविद्यालयः,इन्द्रपुरम्, शिवपुरम्,वाराणसी

Google Meet

Scan Me

Link - https://meet.google.com/osh-yzao-bgd

प्रतिष्ठायाम्

पञ्जीकरण लिंक - https://forms.gle/Aj1SPietYQeJ4HhMA

नवदेहलीस्थ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयसम्बद्धः

रानीपद्मावतीतारायोगतन्त्रादर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः,इन्द्रपुरम्,शिवपुरम्,वाराणसी

नवदेहलीस्थ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्याऽर्थिकानुदानेनानुष्ठिता

अखिलभारतीया-राष्ट्रीयसंगोष्ठी 'तारा'पत्रिकालोकार्पणञ्च

(दिनाङ्क- 18.03.2026ई.बुधवासरः) विषयः-' भारतीयज्ञानपरम्परायां गुरुकुलस्यावदानम्'

कार्यक्रमविवरणम्

उद्घाटनसत्रम्-'तारा'पत्रिकालोकार्पणञ्च (पूर्वाह्ण 10:00वादनतः मध्याह्नं 12:00यावत्)

मुख्यातिथिःसमुद्घाटकश्च - श्रीरवीन्द्रजायसवालः,राज्यमन्त्री स्वतन्त्रप्रभारः,उत्तरप्रदेशशासनम्

अध्यक्षः - प्रो.बिहारीलालशर्मा, कुलपतिः,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः,वाराणसी (महाविद्यालयीयप्रबन्धसमितेरध्यक्षश्च)

मुख्यवक्ता - प्रो.सदाशिवकुमारद्विवेदी, संस्कृतविभागाध्यक्षः कलासङ्कायः,काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः,वाराणसी

व्याख्यानसत्रम् मध्याह्न 12:00वादनतःअपराह्णं 01:30यावत्

अध्यक्षः - डॉ.कमलेशझा (प्राचार्यः)

मुख्यवक्ता - प्रो.धर्मदत्तचतुर्वेदी, सङ्घायाध्यक्षचरः केन्द्रीयतिब्बतीसंस्थानम्, सारनाथः,वाराणसी

वक्ता - श्रीदीनदयालजी, काशीप्रान्तसम्पर्कप्रमुखः,राष्ट्रीयस्वयंसेवकसंघः

मध्यावकाशः अपराह्णं 01:30वादनतः अपराह्णं 02:30यावत्

सम्पूर्त्तिसत्रम् अपराह्ण 03:00वादनतः सायं 05:00यावत्

अध्यक्षः - डॉ.कमलेशझा (प्राचार्यः)

मुख्यातिथिः - प्रो.नागेन्द्रपाण्डेयः,अध्यक्षः श्रीकाशीविश्वनाथमन्दिरन्यासः

मुख्यवक्ता - डॉ.नन्दिताशास्त्री,अध्यक्षः,पाणिनिकन्यासंस्कृतमहाविद्यालयः,वाराणसी
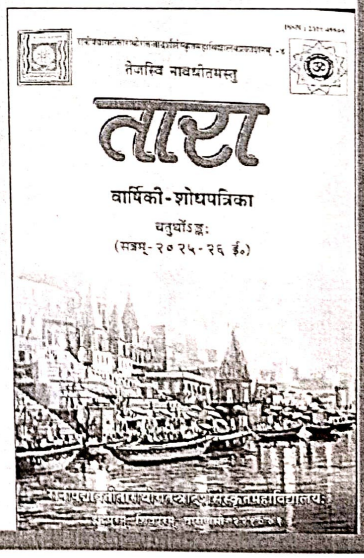
वक्ता - डॉ.विशाखाशुक्ला,शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्षः,सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः,वाराणसी